कारपोरेशन आफ इंडिया का कर्मचारी तथा वहां के किसी रेल कर्मचारी का पुत्र बताया जाता है। पिछली बार 1971 में संभवत : इस व्यक्ति ने ऐसा ही घृणित प्रयास किया था। मगर उसके बाद भी सरकार इस ओर से निश्चिन्त रही और आगे ऐसी घटनाओं पर रोक लगाने की कोई समुचित व्यवस्था नहीं की जा सकी सको जो कि आश्चर्य की बात है।

मैं इस घटना का विशेष उल्लेख करते हुए सरकार से आशा करता हूं कि वह अपराधियों के विरुद्ध कड़ा कदम उठाकर भविष्य के लिए सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करेगी। साथ ही मेरी धारणा है कि देश में कतिपय उग्रवादी पार्टियां देश की शांति और सुरक्षा को अस्त-व्यस्त करके देश में आतंक और अशांति फैलाना चाहती है। राजधानी एक प्रेस पर बम फेंकने की घटना भी उसी कड़ी का एक अंग है। रेल दुर्घटनाओं में, गत वर्षों में जो वृद्धि हो रही है, उससे मुझे ऐसा लगता है कि उसके पीछे भी सुनियोजित षड़यंत्र है। अतएव भारत सरकार को इस ओर विशेष ध्यान देकर सुरक्षा की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए और ऐसे तत्वों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए ताकि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो सके।

REFERENCE TO THE PROBLEMS OF AYURVEDIC STUDENTS IN DELHI

डा० भाई महावीर (मध्य प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष जी, 11 फरवरी को एक समाचार छपा कि दिल्ली प्रदेश में नांगलोई के पास मुंडका नाम के गांव में जो आयुर्वेदिक कालेज चल रहा था उसको डिसएफिलियेट कर दिया गया। यह आयुर्वेदिक कालेज, महोदय, एक गांव में चलाया गया और इस में पहले बैच में 95 विद्यार्थी दाखिल हुए। उसके बाद दिल्ली सरकार की जो परीक्षा लेने वाली समिति है उसने देखा कि कालेज के पास कोई सुविधाएं नहीं हैं, कोई प्रबन्ध नहीं है, विद्यार्थियों को ठीक पढ़ाने का इन्तजाम नहीं है तो उन्होंने पाबंदी लगा दी कि इसके बाद और बैचेज दाखिल नहीं किये जाएंगे। लेकिन उस पाबंदी के बावजूद दो और बैचेज उस कालेज में दाखिल किये गये और इस तरह से लगभग ढाई सौ विद्यार्थी उस कालेज में हो गए। 95 कायदे से और 155 बेकायदे उसमें पढ़ रहे हैं। इस कालेज को डिसएफिलियेट करने का, महोदय, जो समाचार छपा इसका परिणाम यह हुआ कि ढाई सौ विद्यार्थी आज सड़क पर है। वे कभी कहीं जा रहे हैं, कभी कहीं जा रहे हैं। कभी सरकार के प्रतिनिधियों से मिल रहे है, प्रशासन वालों से मिल रहे हैं। हमारे पास भी आए है। अब वे कहते हैं कि अब हमारा क्या होगा। वहां कालेज नहीं है उस कालेज की अपनी एक निराली कहानी है। कल्पनाथ राय जी, आपका ध्यान (व्यवधान)

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI R. RAMAKRISHNAN): The hon. Parliamentary Affairs Minister, your attention please.

संसदीय कार्य विभाग में उपमंत्री (श्री कल्पनाथ राय) : मैं सुन रहा हूं।

डा० भाई महावीर : आप जरा थोड़ा ध्यान दें यह विषय जो है...

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI R. RAMAKRISHNAN): You are the representative of the Government. They want your attention.

डा० भाई महावीर : मैंने आपको इसलिए खास नाम ले कर पुकारा कि यह विषय ऐसा है कि कल अगर बिगड़ेगा तो उस वजह से हमको और आपको ज्यादा परेशानी हो सकती है। यह जो धनवंतरि आयुर्वेदिक कालेज दिल्ली में चलाया गया है उसको डिसएफिलियेट कर दिये जाने का परिणाम यह हुआ है कि ढाई सौ छात्र यह आज नहीं जानते कि वे कहां जाएं। उस कालेज में 10-12 कामचलाऊ टूटे फूटे कमरे बनाए गये, बिजली नहीं है, पानी की टूटियां कोई नहीं हैं,

[डा० भाई महावीर]

लेबोरेटरी नहीं है । इस तरह का यह कालेज है । जो कमेटी दिल्ली प्रशासन की उसका निरीक्षण करने के लिए गई उन्होंने इस प्रकार का वर्णन दिया—

"It all looks like a big joke in the name of Ayurvedic College. The College does not deserve affiliation of the Delhi Administration Examining Body and recognition must be withdrawn immediately."

यह उस निरीक्षण समिति की सिफारिश के बाद एफिलियेशन वापिस ले लिया गया लेकिन महोदय, एफिशियेशन वापिस लेने के आगे भी कुछ करना चाहिये था । यह नहीं हुआ । यह कालेज जो सज्जन चला रहे हैं वे अपने आप को सत्यार्थी कहते हैं उनका नाम सत्यार्थी है और वे उस कालेज के कुलपति, उसके प्रिंसिपल, उसके अध्यापक, डिमानस्ट्रेटर सभी कुछ वही है और न जाने क्या क्या वे बने हैं । तो उन्होंने वहां पर छोटा सा 7–8 बेड्स का एक अस्पताल बनाने का भी नाटक किया जिसका नाम उन्होंने श्री संजयगांधी के साथ जोड़ा । एक योगाश्रम बनाया जिसका नाम धीरेन्द्र ब्रह्मचारी के साथ जोड़ा । हालांकि अखबार में यह समाचार आया कि जब धीरेन्द्र ब्रह्मचारी से किसी ने पूछा तो उन्होंने कहा कि उस आश्रम को मैं जानता तक नहीं और न ही मेरा उसके साथ कोई सम्बन्ध है । लेकिन इस तरह से सत्यार्थी जी का सत्य से कितना वास्ता है यह मैं नहीं जानता परन्तु उन्होंने लगभग सभी छात्रों से एक हजार रुपये से ले कर 5 हजार रुपये तक बिल्डिंग फंड के नाम से लिये और 11 सौ रुपये फीस वार्षिक वे लेते हैं इस नाम पर कि उन्हें आयुर्वेद की शिक्षा दी जाएगी । इस आयुर्वेद की शिक्षा संस्थान के लिए उन्होंने तीन प्रयोग पहले भी किये । उन्होंने एक प्रयोग हरियाणा आयर्वेदिक कालेज रोहतक में बनाया था जो 1970 से 1974 तक चला । इसके बाद एक प्रयोग धनवंतरि कालेज का उन्होंने इस प्रकार का चंडीगढ़ में 1975 से 1977 में किया । यह भी दो साल तक चला । इन्हीं दो सालों में पंजाबी बांग में धनवंतरी आयुर्वेदिक कालेज बनाया इस प्रकार इन सालों में इन्होंने तीन स्थानों पर यह प्रयोग किया । जब वहां की सरकारों ने यह देखा कि उसमें कोई सुविधा नहीं है शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं है तो इनको बन्द किया और एफिलियेशन वापिस ले लिया । अब यहां पर उनको एफिलियेशन कैसे मिला । वे अपने आप को धनवंतरि आयुर्वेद, डी०ए०वी० नाम से एक बहुत बड़ा शिक्षा आन्दोलन है, वे डी०ए०वी० संस्थाओं के नाम से सभी लोगों को धोखा देने की कोशिश करते हैं । जो अध्यापक रखते है एक दो महीने उनको रखते हैं और बाद में उनको जवाब दे देते हैं और फिर नये शिक्षक रखते हैं । जो नये शिक्षक रखते है उनको कहते हैं कि अगर छात्रों को तुम संतुष्ट करोगे तो तुम रहोगे नहीं तो तुम चले जाओगे । उनकी नजर में कभी कोई भी शिक्षक छात्रों को संतुष्ट नहीं कर पाता । महीने दो महीने के बाद उनको बिना वेतन के जवाब दे दिया जाता है । यह धोखाधड़ी की सारी कहानी वहां पर चल रही है । इसका नुक्सान किस को होगा, यह विचार करने की बात है । यह तो एक कालेज है । श्रीमन्; इसी प्रकार के दो और कालेज दिल्ली में हैं । एक कालेज सनातम धर्म आयुर्वेदिक कालेज के नाम से कृष्ण नगर में है और दूसरा अहिंसा आयुर्वेदिक कालेज शंकर रोड पर है । तीनों के छात्रों ने गत अक्तूबर 1979 में एक बड़ा आंदोलन किया जो आठ महीने चला, उस आंदोलन के परिणामस्वरूप 20 जून, 1980 को लोकसभा में स्वास्थ्य मंत्री श्री शंकरानन्द जी ने आश्वासन दिया कि छात्रों को सब सुविधायें प्रदान की जायें इन फेसेज और सरकार उनके साल की भी बरबादी नहीं होने देगी । 20 जून, 1980 से महोदय आज मार्च 1982 आ गया लेकिन उन आश्वासनों का कोई क्रियान्वयन नहीं हुआ और उन तीनों

कालेजों की हालत यह है कि वहीं भी कोई व्यवस्था नहीं है। 6 सौ नवयुवक धक्के खाते हुए वहां जाते हैं, कुछ पता नहीं है उनको वहां क्या ज्ञान मिलेगा और किस तरह की डिग्री कर सकेंगे। जो सेंट्रल काउंसिल आफ इंडियन मेडीसिन है वह उनको रिकग्नाईज नहीं करती है। लेकिन उन्होंने कभी निरीक्षण नहीं किया है। वे कहते है कि सब स्टेंडर्ड कालेज है। कभी वहां गये बगैर, पूछताछ किये बगैर यह फैसला कर रखा है और उनको कोई सुविधा नहीं दी जाती है. . . (घंटी) मैं समाप्त कर रहा हू। इस स्थिति में महोदय, यह प्रश्न है कि आखिर इन छात्रों के साथ सरकार क्या करना चाहती है। डिस-एफीलियेशन करने के बाद सरकार का काम है कि उन छात्रों को परीक्षा देने के लिए कोई सुविधा दे। लेकिन दिल्ली के जो डायरेक्टर हैल्थ सर्विसेस हैं व उस इक्जामिनिंग बाडी के अध्यक्ष हैं जो इन आयुर्वेदिक कालेजों की परीक्षा लेते हैं, उन्होंने कहा है कि "There is no provision for inter-State migration in this Act." यानी एक कालेज से दूसरे कालेज में बालक जा नहीं सकते। इसका मतलब यह है कि ये जो डिस-एफीलियेटेड हो गये, इनको आज पता नहीं है कि कहां रहेंगे। दूसरे दो जो कालेज हैं उनकी हालत अच्छी नहीं है। इसलिए मैं मंत्री जी से अनुरोध करना चाहता हूं कि ये 6 सौ छात्र जो आज सड़क पर भटक रहे हैं, इनके भविष्य का विचार करके सरकार कम से कम यह बात तय करे पहली बात यह कि इनके माईग्रेशन की व्यवस्था करे ताकि ये इस साल परीक्षा दे सकें, परीक्षा में बैठ सकें, इसका प्रबंध हो।

दूसरा जो इक्जामिनेशन फार्म्स वगैरह उन्होंने देने हैं जो सीधे तौर पर उनसे नहीं लिये जा सकते, कालेज के द्वारा लिये जाते हैं, वे उनसे कैसे लिये जायें इनको दूसरे कालेजों में प्रवेश मिले इस गुत्थी को सुलझाया जाय।

तीसरी चीज यह है कि जो बाकी संस्थाएं हैं, अहिंसा और सनातन धर्म कालेज, इनको उचित आवश्यक सहायता दे करके इस योग्य बनाया जाय कि जो छात्र वहां पढ़ रहे हैं, उनको ठीक से शिक्षा मिले। स्वास्थ्य मंत्री जी के जो आश्वासन है, दो आश्वासन दिये गये हैं, एक लोकसभा के सामने भी तो उन आश्वासनों का उचित मूल्य समझा जाय और इन छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड न किया जाय। ऐसा न हो कि आखिर वे छात्र है उनके पास एनर्जी होती है, वे भटक करके किसी गलत रास्ते पर चले और फिर ऐसी समस्या बनें कि जिससे सरकार को और हम सबको परेशान होना पड़े। मुझे आशा है कि सरकार इस समस्या को समय रहते संभालेगी और ज्यादा बिगड़ने नहीं देगी।

I. THE SUGAR CESS BILL, 1982

II. THE SUGAR DEVELOPMENT FUND BILL, 1982

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRIES OF AGRICULTURE AND RURAL RECONSTRUCTION (SHRI R. V. SWAMINATHAN): Sir, I beg to move:

> "That the Bill to provide for the imposition of a cess on sugar for the development of sugar industry and for matters connected therewith, as passed by the Lok Sabha, be taken into consideration."

Sir, I also beg to move:

> "That the Bill to provide for the financing of activities for development of sugar industry and for matters connected therewith or incidental thereto, as passed by the Lok Sabha, be taken into consideration."

Sir, both these Bills are interconnected. The necessity for these Bills has arisen now because the sugar factories in India have outlived, particularly those in Bihar and UP, and they require modernisation. But these factories lack the